मत्तः =मुझ से; **परतरम्** =श्रेष्ठ; **न** =नहीं; **अन्यत्** =अन्य; **किञ्चित्** =कुछ भी; **अस्ति** =है; **धनञ्जय** =हे धनविजयी अर्जुन; **मयि** =मुझ में; **सर्वम्** =सब कुछ; **इदम्** =जो दृष्टिगोचर है; **प्रोतम्** =ग्रथित है; **सूत्रे** =धागे में; **मणिगणाः** =मुक्ताहल; **इव** =की भाँति।

अनुवाद

हे धनञ्जय ! मुझ से श्रेष्ठ अन्य कोई तत्त्व नहीं है। सूत्र में ग्रथित मणियों की भाँति यह सब कुछ मेरे आश्रित हैं।।७।।

तात्पर्य

परमसत्य साकार है या निराकार—इस सम्बन्ध में बहुचर्चित विवाद है। जहाँ तक भगवद्गीता का सम्बन्ध है, भगवान् श्रीकृष्ण मूर्तिमान् परमसत्य हैं। गीता के पद-पद पर यह प्रमाणित हुआ है। विशेष रूप से इस श्लोक में यह बलपूर्वक कहा गया है कि परतत्त्व (परब्रह्म) एक विशिष्ट पुरुष हैं। ब्रह्मसंहिता में भी भगवान् श्रीकृष्ण की परात्परता प्रमाणित है : **'ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्द विग्रहः'**, सच्चिदानन्दमय विग्रह से युक्त, गोविन्द नामक आदिपुरुष भगवान् श्रीकृष्ण परब्रह्म परतत्त्व हैं। ये सब प्रमाण निर्विवाद रूप से सिद्ध करते हैं कि श्रीकृष्ण सब कारणों के परम कारण पुरुषोत्तम हैं। फिर भी, निराकारवादी श्वेताश्वतरोपनिषद् में उपलब्ध इस वैदिक मन्त्र के आधार पर असत् तर्क उठाते हैं: **ततो यदुत्तरतरं तदरूपमनामयं य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापियन्ति।** ब्रह्माण्ड के प्रथम जीव ब्रह्मा को देवता, मनुष्य और पशु आदि संसार के सब प्राणियों में सर्वोपरि माना जाता है। पर ब्रह्मा से भी परे एक परतत्त्व है, जिसका कोई प्राकृत रूप नहीं है और जो प्राकृत विकारों से पूर्ण मुक्त है। उस तत्त्व को जानने वाला भी जगत् से अतीत हो जाता है, जबकि उसके अज्ञानी जीव जागतिक यन्त्रणायें भोगते रहते हैं।

निराकारवादी **अरूपम्** शब्द को बहुत महत्त्व देते हैं। वास्तव में यह **अरूपम्** शब्द निराकारता का वाचक नहीं है। इससे तो केवल यही कहा गया है कि श्रीभगवान् का विग्रह सच्चिदानन्दमय है, जैसा उपरोक्त ब्रह्मसंहिता में वर्णन है। श्वेताश्वरोपनिषद् के अन्य श्लोक भी इस तथ्य के पोषक है :

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विद्वानमृत इह भवति नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।
यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नणीयो न ज्यायोऽस्ति किञ्चित्।।

'संसार के अन्धकार से सर्वथा परे श्रीभगवान् को मैं जानता हूँ। उनके तत्त्व को जानने वाला ही जन्म-मृत्यु के बन्धन का उल्लंघन कर सकता है। परम पुरुषोत्तम के ज्ञान से अतिरिक्त मोक्ष का कोई अन्य पथ नहीं है।'

'उन परम पुरुषोत्तम से उत्तम अन्य कोई तत्त्व नहीं है। वे अणुतम तत्त्व से भी अणुतर हैं एवं महान् से भी महान् हैं। वृक्ष के समान मौन स्थित रहते हुए वे